P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-III*November-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

यशपाल – स्त्री चिंतन

सारांश

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते,रमन्ते तत्र देवता" अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवताओं की कृपा बरसती है। भारतीय समाज में एक तरफ स्त्री को 'देवी' कहा गया, 'ढोल गंवार शूद्र पशु–नारी, यह सब ताड़न के अधिकारी' कहकर स्त्री को उपेक्षित भी किया गया हैं। यशपाल समाज के इसी दोहरे रुप के विरुद्ध ऐसे सभ्य समाज की कल्पना करते हैं, जहाँ स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक हों। वे स्त्री शोषण के प्रति सूक्ष्म नजरिया रखते हैं और ऐसे समतामूलक समाज का आदर्श प्रस्तुत करते हैं जो परम्पराओं की जटिलता से मुक्त हो।

मुख्य शब्द : नारी विमर्श, पितृवादी सत्ता, रहस्योद्‌घाटन, नैतिकता, सृजनात्मक, वर्ण व्यवस्था, में परंपरागत समाज, अंतरराष्ट्रीय, बौद्धधर्म, आर्यसमाज. धर्म सत्ता, आधी आबादी, समाजवादी व्यवस्था, आर्थिक, बौद्धिक, अधिकार, संस्कृति।

अंजू सिंह
अध्यापिका,
हिंदी विभाग,
खान्द्रा कॉलेज,
खान्द्रा, वर्धमान,
विद्यासागर विश्वविद्यालय,
खांद्रा ,मिदनापुर

प्रस्तावना

संसार में बह्म है तो प्रकृति है। ब्राह्न जड़ है तो प्रकृति स्त्री रुपिणी है। संसार का जैविक विकास स्त्री पुरुष के समन्वय से हुआ है। प्रकृति रुपेण दो अलग – अलग घटक होने पर भी परिवार समाज और राष्ट्र के लिए दोनों की सहभागिता आवश्यक है। वैदिक युग में नारी का महत्व था, तभी तो वेद, ऋचाओं के निर्माण में अपालाघोष, लोपामुद्रा आदि के नाम आते है। आगे चलकर संहिता में भी नारी के महत्व की विवृत्ति है, जैसे – यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता रमण करते हैं। फिर आगे चलकर मध्यकाल आया पुराण की दुर्गा केवल पूजा की वस्तु बनकर रह गई। कुछ अपवादों को छोड़कर नारी की स्थिति बड़ी दयनीय रही कबीर तक ने कह दिया, "नारी की झाँई पड़त, अंधा होत भुजंग" और तुलसी ने, ढोल, गंवार, शूद्र, पशु की पंक्ति में नारी को खड़ा कर दिया। सामंती युग के बाद, लोकतंत्र का उदय हुआ । सुधारवादी आन्दोलन के साथ भारतवर्ष में नवजागरण आया और नारी जागरण का विकास हुआ। जागरण के युग के बाद, विमर्श का युग आया, फिर से अस्मिता की तलाश हुई और नारी सशक्तिकरण पर जोर दिया गया । लोकतंत्रीय परिवेश में ऐसा होना लाजमी था।

नारी विमर्श को सुदृढ़ रुप देने में कथा साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण उपन्यासकारों में यशपाल प्रमुख है। देश गुलाम था फिर स्वतंत्र हुआ और विभाजन की त्रासदी का साक्षी इतिहास रहा है। इन परिस्थितियों में नारी की स्वतंत्र सत्ता की खोज यशपाल ने 'मेरी तेरी उसकी बात' (1974 ई0),'दादा कॉमरेड' (1941ई0),'पार्टी कॉमरेट'(1946 ई0), 'झूठा सच' (1958–1960), से लेकर 'दिव्या' (1945 ई0) तक प्रत्येक में प्रस्तुत की है, जिसका विवेचन विश्लेषण अपेक्षित है।

उद्‌देश्य

हिन्दी कथा साहित्य में यशपाल एक प्रगतिशील यथार्थवादी स्त्री चिंतक के रूप में उभरकर आते हैं। भारतीय परम्परा में स्त्री की दयनीय स्थितियों से वे खूब परिचित थे। इससे वे न केवल चिंतित थे बल्कि स्त्री–मुक्ति हेतु अपने उपन्यासों में उनका लेखकीय संघर्ष सतत् जारी था, जो समकालीन संदर्भ में भी प्रांसगित बना हुआ है। इस विचारभूमि के प्रेरक रूप का उद्‌घाटन विवेचन विश्लेषण इस शोध–पत्र का प्रमुख उद्‌देश्य है।

वैचारिक पृष्ठभूमि

व्यक्ति समाज की इकाई होता है। कोई भी समाज सम्पूर्ण विकास तभी प्राप्त कर सकता है, जब उस समाज के विकास में स्त्री एवं पुरुष की सहभागिता बराबर हो। यशपाल के शब्दों में "समाज के पूर्ण विकास के लिए समाज के आधे भाग स्त्री का सहयोग आवश्यक है।"[1] चेतनशील समाज, सचेतन

और प्रगतिशील राष्ट्र को जन्म देती है। अतः स्त्री की मुक्ति केवल स्त्री समाज की मुक्ति नहीं बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र की प्रगति है। इन्ही तथ्यों के आधार पर यशपाल ऐसी ही स्त्री पात्रों को रचते और स्त्री पुरुष परम्परागत परम्परा को चुनौती देते दिखाई पड़ते है। जहाँ स्त्री पुरुष एक दूसरे के पूरक हो ऐसे ही समतामूलक समाज की पुनर्स्थापना करना चाहते हैं। "वह न तो भारतीय आदर्श महिला है, न ही सावित्री, न ही आधुनिक तितली है, न ही रुग्ना बाला। यशपाल की नारी घर की सजावट भी नहीं है। वह पुरुष के कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने वाली है।"[2]

यशपाल मार्क्सवादी विचारधारा से प्रतिबद्ध उपन्यासकार थे। मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार समाज में उसी की सत्ता चलती है, जिसका उत्पादन पर वर्चस्व होता है। एंगेल्स ने अपनी पुस्तक "परिवार निजी सम्पत्ति और राज्य की उत्पत्ति" में कहा कि उत्पादन में भागीदारी के उपरान्त ही स्त्री की पराधीनता खत्म होगी। एंगेल्स के शब्दों में – The First Condition the Liberation of the Wife is to Bring the Whole Female Sex Back in to Public Industy,"[3]

मार्क्सवाद स्त्री को समाजिक उत्पादन में भाग लेकर सर्वहारा के साथ मुक्ति का उपाय तो सुझाता है, लेकिन स्त्री के घरेलू कार्य को मान्यता देने सम्बन्धी निर्णय की अनदेखी कर जाता है। यशपाल मार्क्सवादी होते हुए भी, स्त्रियों के श्रम–स्थल घरेलू काम को मान्यता देने का विकल्प प्रस्तुत करते है, "यहाँ पड़ोस की स्त्रियों को मैं देखती हूँ बचपन से भी देखती आई हूँ। वे केवल घर का काम नहीं कर देती, वे ही घर बनाती है।"[4] स्त्री उत्पादन के कार्यों में समान रुप से भाग लेती आई है, लेकिन उसके द्वारा किये गये कार्यों को केवल कर्त्तव्य की नजर से देखा जाता है। समाज में स्त्री और पुरुष के लिए दो तरह के कानून लागू है। झूठा सच की कनक स्त्री – पुरुष के मध्य, इसी विभाजक रेखा को चिन्हित करती हुई कांता से कहती है, "पत्नी के कर्त्तव्य और पति के अधिकार का ही तो सबसे बड़ा झगड़ा है।"[5]

यशपाल इस तथ्य पर जोर देते हैं कि भारतीय समाज में स्त्रियों के प्रति अन्याय और उत्पीड़न के मूल में शिक्षा का अभाव है। उनका मानना है कि शिक्षा स्त्री मुक्ति का महत्वपूर्ण साधन है और चेतना के विकास के बिना यह साध्य पूरा होना कठिन है। यशपाल के उपन्यास के लगभग सभी स्त्री पात्र शिक्षित, चेतनशील, बौद्धिक और अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं। वे ऐसे स्त्री चरित्र को गढ़ते है जिनका समाज में सम्मान है जिनकी अपनी गरिमा है। वह एक 'कॉन्शस' फीमेल है। 'दादा कॉमरेड' की शैल, 'पार्टी कॉमरेड' की गीता, 'मेरी तेरी उसकी बात' की ऊषा रिसर्च स्कॉलर है, 'झूठा सच' की कनक एम0 ए0 और तारा आई0 एस0 ऑफिसर है, दिव्या को नृत्यकला में सरस्वती पुत्री का खिताव मिल चुका है आदि ऐसे ही जागरुक स्त्री व्यक्तित्व का प्रतीक और अपने हौसलों से बुलंद नारियाँ है। वह किसी के बहलाने फुसलाने से बहलने वाली मादा नहीं है बल्कि तर्क की कसौटी पर अपनी बात को सही साबित करने वाली विवेकशील जागरुक 'फीमेल' है।

पितृवादी सत्ता में स्वतंत्रता का रहस्योद्घटन करते हुये यशपाल प्रश्न उठाते है कि, भारतीय समाज में विवाह के नाम पर सुखमय जीवन की दुहाई देते हुए, माता–पिता द्वारा लिये गये फैसले को लड़कियों पर थोप दिया जाता है। लड़का है तो विद्रोह कर सकता है, लेकिन लड़कियों के लिए ऐसा सोचना भी पाप है। तारा पितृसत्ता के स्त्री विरोधी इसी चरित्र का प्रतिवाद करती है। जहाँ पुरी के लिए विजातीय कनक से प्रेम और विवाह परिवार द्वारा स्वीकार्य है, वही तारा द्वारा किसी से प्रेम करना परिवार की इज्जत के अनुकूल नहीं है – "दूसरों की लड़की को चोरी से संदेश भेजने में इनकी इज्जत नहीं बिगड़ती। परिवार की सब इज्जत मेरे ही बलिदान में है।"[6] पुरुषवादी संस्कृति कभी भी अपनी अवहेलना बर्दाश्त नहीं कर सकती है। कनक, ऊषा, तारा पितृवादी संस्था के इसी अहंकार को तोड़ती हुई, न केवल प्रेम करती है बल्कि विवाह भी करती है।

परिवार, विवाह, दाम्पत्य जैसी परम्परागत समाजिक संस्था में स्त्री शोषित और उत्पीड़ित ही अधिक रही है। सीमोन द बोउवार, किसी भी समाज में स्त्री की स्थिति एक नीग्रो से भिन्न नहीं पाती। ये दोनों ही जातियां पितृसत्ता से मुक्ति चाहती है। एक संस्था के रुप में 'विवाह' पर विचार करते हुए वे लिखती हैं, "विवाह जहाँ स्त्री को पुरुष का गुलाम बनाता है, वही उसके घर की सामाग्री भी——————————।"[7]

कनक और ऊषा के माध्यम से यशपाल विवाह संबंधी उस मिथ को तोड़ते हैं कि विवाह एक बार होता है, बार–बार नहीं। प्रेम विवाह के बाद भी अगर चुनाव गलत हो, तो उसे जिंदगी भर ढ़ोने के बजाय तोड़ना ही विवेकशीलता है। पुरी से असंतुष्ट कनक तिल–तिल कर घुटन भरी जिंदगी जीने के बजाय, उससे वैवाहिक संबंध तोड़ने का निश्चय करती है। इसी क्रम में ऊषा भी अमर को स्पष्ट कहती है, "यदि फिर से चुनना है। इट इज नॉट यू।"[8]

यशपाल ने अपने क्रांतिकारी जीवन में बड़ी गहराई से अनुभव किये थे कि मनुष्य जीवन का अधिकांश समय नैतिकता और मर्यादा के आवरण में ही उलझकर रह जाता है। यही नैतिकता नये विचारों के प्रयोग में सबसे बड़ा बाधक हैं। वे मानते हैं कि, समाज क्या कहेगा? के बजाय जीवन के लिए उपयुक्त फैसला ही वास्तविक जीवन की पहल है। 'मेरी तेरी उसकी बात' की जयरानी अपनी बेटी की पाँच वर्ष पूर्व की गई सगाई तोड़ देती है क्योकि मीरा को वह लड़का पसन्द नहीं था। झूठा–सच की डॉ0 श्यामा अविवाहित है परंतु डे के साथ उसके संबंध है। उसकी समझ में यह अनुचित नहीं हैं क्योंकि शारीरिक आवश्यकता को वह प्राकृतिक आवश्यकता के रुप में देखती है। जिस प्रकार पुरुष अविवाहित होते हुए यौन संबंध बनाये रखने के लिए स्वतंत्र है उसी प्रकार स्त्री के लिए अविवाहित जीवन अनुचित या असामाजिक नहीं है। 'मेरी तेरी उसकी बात' की माया अपने मित्र और पति के बीच संतुलन बनाये रखती है और पाठक से प्रश्न भी करती है, "क्यों मैं घोष की सम्पत्ति हूँ? मेरा अपना कोई भी अस्तित्व नहीं?"[9]

यशपाल मानते हैं कि नर–नारी के आकर्षण तथा दामपत्य को समाजिक कर्तव्य के बजाय व्यक्तिगत जीवन की आवश्यकता के रुप में देखा जाय।

पितृसत्तात्मक सत्ता स्त्री के मातृत्व गुण के कारण उसे देवी का स्थान देता है। यशपाल इसे बहुत बड़ा षडयंत्र मानते हैं, वे कहते है कि पितृवादी सत्ता स्त्री की मातृत्व शक्ति को तभी सम्मान देती है, जब वह किसी पुरुष की इच्छानुसार माँ बने। अगर स्त्री स्वयं की इच्छानुसार माँ बनती है तो समाज उसे कलंकिनी, समाजद्रोही आदि नामों से अपमानित करती है। मातृत्व जैसी सृजनात्मक गुण होते हुए भी स्त्री को पुरुष का मोहताज रहना पड़ता है। 'दिव्या' दासी दारा से लेकर अंशुमाला तक की यातनामयी जीवन जीने के लिए बाध्य होती है। 'शैल' को भी पितृ–गृह त्याग कर दादा की शरण में जाना पड़ता है। बौद्धकालीन परिवेश में दिव्या अपने अविवाहित गर्भधारण के कारण 'सीरों' के साथ संख्य भाव से सपत्नीत्व स्वीकार करने को तैयार हो जाती है क्योंकि विधिवत विवाह के बिना स्त्री का मातृत्व धारण करना कलंक का विषय है।"आर्य मोक्षा का गर्भ परिवार के लिए उल्लास का कारण है और मेरा गर्भ कलंक क्योकि मेरे गर्भ का पिता नहीं।"[10] यशपाल इस खोलली परम्परा की आलोचना करते हुए मातृत्व को स्त्री का व्यक्तिगत मामला स्वीकार करते है। अतः यशपाल ऐसी सभ्यता की कल्पना करते है, जहाँ कुँवारी माँ बनना भी स्त्रियों के लिए अभिशाप नहीं बल्कि, स्वेच्छा समझी जाए। प्रथम उपन्यास 'दादा कॉमरेड' में यशपाल शैल के रुप में ऐसी स्त्री पात्र की रचना करते है। जो वर्ण व्यवस्था की रीढ़ विवाह–संस्था का विरोध करती है और कुमारी माँ बनने की साहस भी करती है ।

स्त्री को हमेशा से ही पुरुषों की संपत्ति समझा गया जो मालिक की मृत्यु के पश्चात् भी उसकी गुलामी से मुक्त नहीं हो सकती। पितृसत्तात्मक समाज में विधुर पुरुष का विवाह सामान्य सी बात है लेकिन विधवा स्त्रियों का मानदंड दूसरा है। ऊषा ऐसे जघन्यतम अपराध की भर्त्सना करते हुए कहती है,"हिन्दू विधवा का धर्म क्या एक निष्ठा से रंडापा निबाहना। सब मन्नी और सित्तो नहीं है कि मिट्टी की तरह मींज कर फेंक दे।"[11] गौरी के पति का ट्रेन दुर्घटना में मारा जाना उसके अपशकुन भाग्य का परिचायक बनता है। गौरी अशिक्षित होने के कारण अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों का विरोध नहीं करती। वह पति की मृत्यु को अपनी नियति मान लेती है। वैधव्य का संस्कार इतना गहरा है कि, पुनर्विवाह के बजाए आत्महत्या करना पसंद करती है, "मैं सबको दुःख दे रही हूँ तो मुझे अफीम ला दो।"[12] 'झूठा सच' की उर्मिला विवाह पश्चात् विधवा हो जाती है। लेकिन वह गौरी की तरह अपने को मार नहीं देती बल्कि पुरी द्वारा छले जाने पर भी आत्मनिर्भर होती है और डॉ मोंगिया से विवाह कर पुरी के छल का प्रतिउत्तर देती है। गौरी के माध्यम से यशपाल ने पारम्परिक विधवा जीवन की त्रासदी स्पष्ट किया है तो उर्मिला और ऊषा के माध्यम से विपरीत परिस्थियों में भी सम्मान और आशापूर्ण जीवन जीने की कला को दर्शाया है। 'बारह घंटे' की विनि आर्थिक रुप से मजबूत एक प्रौढ़ महिला है। पति की मृत्यु के पश्चात् वैवाहिक जीवन का संतोष जो उसे पति से मिलता था, वह प्रेम शारीरिक जरुरत नहीं बल्कि मानसिक जरुरत था। वही मानसिक जरुरत उसे मि0 फैण्टम के प्रेम में दिखलाई पड़ती है, इसलिए वह मि0 फैण्टम से प्रेम करने लगती है। विनी की बहन जेनी को यह प्रेम पितृवादी व्यवस्था की अवहेलना जान पड़ती है और वह विनी का विरोध करती है। यशपाल विनी के माध्यम से यह स्पष्ट करते है कि प्रौढ़ स्त्री सम्पूर्ण दायित्व से पहले एक मनुष्य है, न कि पितृवादी व्यवस्था की जागीर? उनका सुझाव है कि प्रेम को परम्परागत नैतिकता के चश्मे से देखने के बजाय आधुनिक परिस्थिति बोध के अनुसार समझने परखने का दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए, "पाठक विनी के व्यवहार को केवल संस्कारगत नैतिकता के विश्वास से ही नहीं, आधुनिक परिस्थिति बोध से प्रेरित चिन्तन से भी देखने का यत्न करें।"[13]

पुरुषवादी समाज सेक्स को अपनी जागीर समझता है। कोई स्त्री अगर बलात्कार की शिकार होती है तो समाज उसकी पीड़ा समझने और दोषी को दंडित करने के बजाय समाज पीड़ित स्त्री को ही कठघरे में खड़ा कर देता है। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी औरत केवल औरत है, उसके दर्द को व्यक्त करती हुई शशिकला राय लिखती है, "पाकिस्तान में बलात्कार" से संबंधित सख्त कानून बनाया गया। जिया–उल–हक के समय बने इस कानून के तहत सजा बलात्कार के शिकार औरत को दी गई। यह कानून 1979 से 1993 तक कायम था (उसके बाद मुझे नहीं मालूम) अंधी साफिया बीबी का बलात्कार हुआ। जब उसने बताया वह हामिला (गर्भवती) है और वह बलात्कारी का नाम नहीं जानती तो, शरई अदालत ने उसके मुँह पर थप्पर मारा। उसे बीस कोड़े और सोलह साल की कैद की सजा तजबीज की गई।"[14] पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने यौन वर्जना के नाम पर एक विशेष प्रकार के पाखंड को जन्म दिया हैं। 'झूठा सच' की बंती पितृसत्तात्मक समाज की इसी क्रूरता का उदाहरण है। देश विभाजन की त्रासदी का दंश झेलती बंती जब कुछ सालों बाद अपने परिवार और बच्चे से मिलती है। परिवार वाले उसे अपनाने से अस्वीकार कर देते है कारण न जाने वह किस–किस के हाथ में पड़ी होगी और मुसलमानों ने उसे खराब किया होगा। बंती दुःख और व्यथा से व्याकुल ससुराल की चौखट पर, सर पटक–पटक कर अपनी जान दे देती है। मरने के बाद जो लोग उसे घर में घुसने तक नहीं देते वही लोग सुहागन के रुप में उसकी संस्कार करते हैं। यौन शूचिता के नाम पर स्त्री शोषण के इस रुप का विरोध यशपाल के रचनात्मक एजेंडे के केन्द्र में रहा है।

बौद्धधर्म से लेकर आर्यसमाज तक यशपाल सभी जगह इन विकृतियों को देखते है और उसके विरुद्ध मोर्चा बांधते है। धर्म चाहे कोई हो, हिन्दू, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम, स्त्री सब जगह दूसरे दर्जे की नागरिक है। संख्या की दृष्टि से आधी आबादी होकर भी हाशिए पर ही रहती आई है।"तस्लीमा नसरीन आज जिस धर्मसत्ता को पितृसत्तात्मक वर्चस्व से जोड़कर उसके विरुद्ध अभियान को, नारी मुक्ति आन्दोलन का प्रस्थान–बिंदु बनाए जाने पर जोर दे रही हैं, यशपाल उसी धर्मसत्ता की आलोचना शुरु

से करते रहे हैं, धर्म चाहे कोई हो– हिन्दू, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम स्त्री सब कहीं पराधीन है जिसे न अपनी इच्छा से प्रेम करने का अधिकार है, न ही विवाह का। यह सब कुछ इस व्यवस्था के प्रतीक–पुरुष परिवार के मुखिया को ही करना है जिसमें स्त्री का प्रायः कोई भूमिका नहीं होती।"[15]

नारी मुक्ति आन्दोलन के समर्थक और पक्षधर, आज पितृसत्ता के विरोध को अपना प्रस्थान– बिंदु मानकर चलते है, जाने–अनजाने यह काम यशपाल ने बहुत पहले ही आरम्भ कर दिया था। समाज के विकास के लिए स्त्री के रचनात्मक एवं सर्जनात्मक क्षमता के प्रयोग के पक्षधर थे। उपभोक्तावादी और शासनात्मक प्रवृति के कारण सदियों से आधी–आबादी के गुणों का उपयोग न हो सका। अतः यशपाल अपने उपन्यासो के माध्यम से समाजवादी व्यवस्था की नीव रखते है। इस व्यवस्था में स्त्री घर की चारदिवारी लांघ कर समाजिक और राष्ट्रीय जागरण में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेती है। यशपाल का मानना था कि स्त्री प्रतिभा का अंत खाना बनाने, परिवार संभालने में ही व्यर्थ अपव्यय नहीं होना चाहिए। एक स्त्री डाक्टर, अध्यापक, मैनेजर, फोटोग्राफर आदि सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकती है। 'दादा कॉमरेड' की शैल न केवल क्रांतिकारी हरीश से सम्पर्क रखती है, बल्कि हर कदम पर आर्थिक, बौद्धिक और शारीरिक सहयोग भी करती है।'पार्टी कॉमरेड' की गीता राजनीतिक कार्यकर्ता के रुप में वामपंथी पार्टी में सक्रिय भूमिका निभाती है। 'मेरी तेरी उसकी बात' की ऊषा स्वतंत्रता आन्दोलन में क्रांतिकारी दल का नेतृत्व करती है। यशपाल की ये नायिकाएँ गतिशील है। "यशपाल भारतीय समाज के इस पाखण्ड पर चोट करते हैं, जो विभिन्न सामाजिक संस्थानों के गौरव को आधार बनाकर एक छद्म आवरण में स्त्री अधिकारों पर विविध वर्जनाओं और निषेधों का पहरा बैठाता रहा है। वे सामाजिक विकास के संदर्भ में स्त्री की स्वतंत्रता और स्वायत्तता की लड़ाई लड़ते हैं और यथास्थितिवादियों की उग्र प्रतिक्रिया की चिंता किए बिना उन आवरणों को एक झटके में उत्तार फेंकना चाहते हैं।"[16]

भारतीय संस्कृति में स्त्री की पहचान रिश्तों के दायरे में ही सिमट कर रह जाती है। वह किसी की माँ, किसी की बहन, किसी की पुत्री बनकर ही रह जाती है। स्त्री की पहचान पुरुष से हैं, उसके अपने व्यक्तित्व से नहीं। पुरुषवादी व्यवस्था मे यशपाल स्त्रियों की वास्तविक स्थिति दर्शाते हुए कहते है, "आपकी संस्कृति में नारी का गौरव उसके अपने व्यक्तित्व में नहीं हैं। उसका गौरव किसी की श्रीमती बन जाने में है। वह किसी की बेटी, किसी की बहू, किसी की माँ है। वह स्वयं कुछ नहीं है। आपके समाज में नारी को उसके व्यक्तिगत नाम से पुकारना उसका अपमान है। उसे अमुक की श्रीमती, अमुक की माँ या अमुक की बहन कहना ही उसका सम्मान है।"[17] यह कितनी बड़ी बिडंबना है कि परिवार के लिये अपना सर्वस्व अर्पित करने वाली स्त्री, अंततः गुलाम बनकर ही रह जाती है। आदर्शो के बोझ तले स्त्रियों को इतना दबा दिया जाता है कि स्त्री व्यक्तित्व ही ओझल हो जाता है। यशपाल समाज के इसी विकास विरोधी पुरुषवादी प्रवृति के खिलाफ थे। उनका मानना था, स्त्री और पुरुष ही मानव समाज के प्रमुख घटक है, इसलिए दोनों में से किसी एक की उपेक्षा समाज के विकास में बाधक है, "स्त्री–पुरुष गाड़ी के दो पहियों के समान है। वह समाज कभी भी उन्नति के चरम को तब तक प्राप्त नहीं कर सकता जब तक स्त्री–पुरुष की समाज में समान भूमिका न स्वीकार की जाती हो।"[18]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि, यशपाल ऐसे स्वतंत्र समाज का आदर्श प्रस्तुत करते है, जो पुरुषवादी जटिल परम्पराओं से मुक्त हो। जीवन गतिशील हैं और विकसित समाज की यही प्रगतिशीलता है कि समयानुरुप अपने जटिलताओं को छोड़ता जाए। प्रश्न यौन–शुचिता हो या पारम्परिक स्त्री की छवि का यशपाल प्रत्येक जगह स्त्री के पक्ष में खड़े दिखते है। समाज के संपूर्ण विकास के लिए आधी आबादी को समाज के मुख्य धारा से जोड़ने का विकल्प प्रस्तुत करते है। स्त्री मुक्ति के लिए शिक्षा और आर्थिक स्वावलंबन को आवश्यक मानते हैं। अतः यशपाल के अधिकतर स्त्री पात्र शिक्षित, जागरुक और आत्मनिर्भर है। आर्थिक स्वावलंबन के कारण कनक, तारा, सोमा, समाज द्वारा थोपी नैतिकता को चुनौती देती है। अपने सपनों को पाने के लिए अतुल्य साहस दिखाते हुए अपनी जिंदगी को स्वयं के द्वारा निर्धारित मानक पर स्थापित करते हुए साकारात्मक उर्जा के साथ आगे बढ़ती है। वे न केवल फैसले ले लेती हैं, बल्कि उस पर अडिग भी रहती है। यशपाल की स्त्री पात्र स्व निर्णय लेने में सक्षम है। ये अपने अधिकारों के प्रति जितनी सजग है, उतनी ही उन अधिकारों को सुरक्षित रखने की आग्रही भी। स्त्री–मुक्ति के प्रसंग में यशपाल के विचार विश्वसनीय ही नहीं बल्कि प्रासंगिक भी हैं। उनका मानना है कि, स्त्री–पुरुष एक दूसरे को उचित सम्मान देते हुए अपने जीवन में विज्ञान, तर्क और बुद्धि को महत्व दे, और मानवता के आधार पर स्त्री मुक्ति के मार्ग को प्रशस्त करें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. यशपाल के निबंध–खण्ड–2, यशपाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं0 1994, पृ0–95
2. यशपाल की कहानी कला अनु विग, दिल्ली–1966, पृष्ठ–95
3. F. Enlus the Origin of the Family Praivate Property and the Bomby 1944,Page-75
4. झूठा सच, भाग–2, यशपाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं0–2007, पृ0 452
5. झूठा सच, भाग–2, पृ0–437
6. झूठा सच, भाग–2, पृ0–192
7. स्त्री : उपेक्षिता, अनुवाद प्रभा खेतान, पृ0–179
8. मेरी तेरी उसकी बात, यशपाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं0–1995, पृ0–225
9. मेरी तेरी उसकी बात, यशपाल, पृ0–16
10. दिव्या,यशपाल,लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद, पृ0–91
11. मेरी तेरी उसकी बात, यशपाल, पृ0–565
12. वही, पृ0–108
13. बारह घंटे उपन्यास की भूमिका, यशपाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद सं0–2003
14. नारी रचना संसार के पुरुष पात्र, शशिकला राय, बसुधा : स्त्री का सपना–अंक59–69, पृ0–495

15. यशपाल रचनात्मक पुनर्वास की एक कोशिश, मधुरेश, आधार प्रकाशन, सं0–2006 पृ0–303–304
16. यशपाल रचनात्मक पुनर्वास की एक कोशिश, मधुरेश, आधार प्रकाशन, पंचकूला, हरियाणा, सं0–2006 पृ0–295
17. यशपाल के निबन्ध (खण्ड–2), यशपाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं0–1994, पृ0–133
18. समाजवादी यथार्थवाद और हिंदी कथा–साहित्य, डॉ0 प्रेमलता जैन, नवचेतन प्रकाशन,दिल्ली, संस्करण–2004, पृ0–136